विश्व मंच पर भारतीयता की पहिचान

आध्यात्मिकता और मानवीय मूल्य भारत की प्राचीन विरासत है। पूरे विश्व को मूल्यों का पाठ सिर्फ भारत ही सिखाता और पढ़ाता आ रहा है। यही कारण है कि आज भारत भले ही अर्थव्यवस्था में विकसित देशों की श्रेणी में नहीं है परन्तु भारतीय संस्कृति और मानवीय मूल्यों के सहारे उन सभी देशों में इसकी गणना की जाती है जो सम्माननीय रूप से देखे जाते हैं। वैसे भी भारत में जो शिक्षा दी जाती है उसमें मानवीय मूल्यों समाहित होते है जबकि अन्य किसी भी देश में इस तरह की शिक्षा नहीं दी जाती है। हमारे देश में शिक्षा का प्रारम्भ भी गुरूकुल और आश्रमों से ही हुई है। जहाँ भले ही तीरंदाजी और अस्त्रों-शस्त्रों के विद्या दी जाती थी परन्तु साथ में शास्त्र की भी शिक्षा अनिवार्य थी। आज तो भारत सूचना प्रोद्योगिकी, विज्ञान, चिकित्सा के क्षेत्र में इतनी तरक्की कर रहा है कि इसे तीसरी उभरती हुई शक्ति के रूप में जाना जा रहा है।

इन सबके बावजूद आज भारत की ज्यादा अहमियत यहाँ की निष्ठा, ईमानदारी, शान्ति, सदभाव के कारण अधिक दी जाती है। दुनियां के लोग अच्छी तरह जानते है कि भारत देश हमेशा शान्ति और सदभाव का पक्षधर रहा है। वह कहीं भी सामरिक रूप के इस्तेमाल सहयोगी नहीं बल्कि विरोध करता रहा है। क्योंकि ऐसी हालत में गुनाहगारों के साथ बेगुनाहों की जाने तो जाती है पर वहाँ मानवीयता का कत्ल होता है। जो किसी भी देश के लिए शुभ नहीं है। अभी हाल के 21 अगस्त, 2008 को बियाना में परमाणु ऊर्जा के लिए जो बैठक हुई उसमें परमाणु सप्लायर ग्रुप के सदस्यो में अधिकतर ने भारत की निष्ठा और ईमानदारी पर भरोसा जताते हुए परमाणु ऊर्जा देने की वकालत की, यहाँ तक अमेरिका भी। अब तो अमेरिका में लोग भागवद गीता का भी अध्ययन करने लगे हैं। अमेरिका के अगले राष्ट्रपति के दावेदार ओबामा स्वंय हनुमान की मूर्ति लेकर साथ चलते है तथा पूजा करते हैं। क्योंकि हनुमान में मर्यादा पालन करने के साथ-साथ मानवीय मूल्यों से ओत-प्रोत आध्यात्मिक शक्ति है। जिसमें आध्यात्मिक शक्ति और मानवीय मूल्य वे सर्व लोकप्रिय होते हैं।

आज भी जब विदेशों के लोग भारत में यहाँ आते है तो यहाँ की संस्कृति और मूल्य उन्हें सबसे ज्यादा प्रभावित करते हैं। कईयों को इतनी पसन्द आती है कि वे यहाँ अपना ठिकाना भी बना लेते हैं। ऐसे हजारों उदाहरण है। हमें यह गर्व है कि हम भारत जैसे महान देश में पैदा हुए हैं। यहाँ का पारिवारिक ढांचा, सम्बन्ध, रिश्ते नाते पूरी मानवीय श्रृंखला को एक कड़ी के रूप में पिरोये हुए है। जो पूरे विश्व में अन्यत्र कहीं नहीं है। आज भी जब भी किसी देश पर कोई देश हमला करता है तब उसे भारत की प्रतिक्रिया का इंतजार होता है कि भारत की प्रतिक्रिया क्या है। जब भारत प्रतिक्रिया देता है तब वह अधिक प्रभावशाली होता है। यह सब मानवीय मूल्यों के कारण ही तो है।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com